मिला दे मुझको मेरी माई से...

दो बिछड़ी बच्चियों की दास्तान....

रश्मि शर्मा

13 वर्ष की गुड़िया.....तोरपा की रहने वाली. रिश्ते के भैया-भाभी दिल्ली घुमाने के बहाने से ले गए. कुछ दिनों तक अपने पास रखा, उसके बाद एक दिन एक प्लेसमेंट एजेंसी को सौंप दिया. यह कहकर कि कुछ पैसे कमा लो, फिर हम सब गांव वापस चले जाएंगे. संभवतः शहादरा के विश्वास नगर में रहती थी वो, जैसा कि अपनी याद से गुड़िया बताती है.

सांकेतिक तसवीर.

कहती है गुड़िया कि उसकी जैसी और भी कई लड़कियां थीं एक कमरे के प्लेसमेंट एजेंसी में. कुछ दिनों बाद उसे एक घर में काम पर लगा दिया गया. शुरुआत में उसे 1500 देने की बात थी, मगर एक भी पैसा उसके हाथ नहीं आया. घर के मालिक कहते थे कि तुम्हारे भैया-भाभी पैसा ले लेते हैं आकर.

वो बच्ची दिन भर काम में लगी रहती. धीरे-धीरे बड़ी होने लगी. मगर उसके भैया-भाभी कभी दुबारा मिलने नहीं आए. पूछने पर जवाब मिलता कि वो इसलिए तुमसे नहीं मिलते कि तुम उन्हें देखकर रोने लगोगी. भाई का नाम भाते भेंगरा और भाभी का नाम उर्शीला भेंगरा बताती है गुड़िया.

काम करते करते उसे 4 साल हो गए. न कभी भाई-भाभी आए...न ही मां की कोई खबर. पिता तो पहले ही नहीं थे. जिस घर में काम करती थीं, वहां उसे अपमान और प्रताड़ना झेलनी पड़ी. दिन भर काम करने के बावजूद आराम के दो पल नहीं देता था कोई. जरा देर के लिए बैठने पर डांट पड़ती थी.

मां-पिता से सालों नहीं मिल पाती हैं ट्रैफिकिंग की शिकार बच्चियां

आश्रयस्थली व छात्रावास में बच्चों को घर से ज्यादा सुरक्षित महसूस करते हैं अभिभावक

पैसे का प्रलोभन मिलता है, पर हाथ में नहीं आते पैस

अब भविष्य के सपने सजो रही हैं बच्चियां

बड़ी होती गुड़िया को यौन प्रताड़ना भी झेलनी पड़ी. घर में ही रहने वाला दामाद अकेला पाकर छेड़छाड़ करता था. कुछ दिन सहन करने के बाद शिकायत की. हालांकि गुड़िया कहती है कि शिकायत करने पर आंटी ने अपने दामाद को खूब डांटा.

मगर अब गुड़िया की सहनशक्ति जवाब देने लगी. वह घर आना चाहती थी. गांव की याद आती थी उसे. मां की याद आती थी. एक दिन पड़ोस की रहने वाली सहेली से मिलने भाग गयी. कुछ दिन वहीं रही...वापस काम पर जाने का कतई मन नहीं था उसका. उसकी सहेली के पिता ने थाने में खबर कर दी. वह चार महीने तक रिमांड होम में रही. आखिरकार उसका पता ढूंढकर उसे वापस झारखंड भेजा गया. अब वो नाजेरात कान्वेंट के आश्रयस्थली में है. उसके परिजनों की खोज जारी है.

गुड़िया की उम्र तब 13 बरस की थी जब वो यहां से गयी थी. 17 वर्ष की उम्र में वापस आयी है. आंखों में सपना लिए कि अपनी मां के साथ रहेगी, उसकी आंचल की छांव में. गांव के पीपल के नीचे गोटियां खेलेगी सहेलियों संग. मगर उसे अपने गांव के नाम के अलावा कुछ भी याद नहीं. जाने वो नाम भी सही है या नहीं. उसकी मां जिंदा है या क्या पता वो किसी और शहर या गांव चली गयी हो.

इन सवालों को न कोई जवाब मासूम गुड़िया के पास है न ही पुलिस न शेल्टर होम के संचालको के पास.....बस एक उम्मीद और होठों पर दुआ कि.....बरसों से बिछड़ी बच्ची को उसकी मां के आंचल की छांव मिले.

दूसरी तरफ है लातेहार महुआटांड सुगमी की एक 14 वर्षीया बच्ची करमी. रिश्ते की एक आंटी ले गयी उसे. पांच महीने तक रही दिल्ली में. लौटी तो हाथ में हजार रुपए भी नहीं थे. काम करने वाले घर में पिता समान मालिक अपशब्द कहता था. आंटी से शिकायत की मगर कोई फायदा नहीं हुआ. अकेले होने पर शारीरिक उत्पीड़न झेला. एक दिन भाग निकली. पहले निर्मलछाया में दो महीने रही और अब किसान सेवा संघ के शेल्टर होम किशोरी निकेतन में.

वहां उसके परिजनों को खबर कर लड़की को उसके घर भेजा गया. मगर कुछ दिन बाद वापस आ गयी. उसके पिता ही उसे वापस छोड़ गए. क्योंकि उसकी मां दिन भर शराब पीकर पड़ी रहती है. कोई काम भी नहीं करती. पिता को डर है कि करमी अपने घर रही तो फिर किसे के चंगुल में फंसकर दूर हो जाएगी.

आंखों में बेपनाह चमक लिए करमी टीचर बनने के लिए जोरदार पढ़ाई कर रही है. चंचल करमी खुश है...भविष्य की आस लिए...

(यह रिपोर्ट इनक्लूसिव मीडिया फैलोशिप 2013 के अध्ययन का हिस्सा है)

सिलाई-कढ़ाई के कार्य से आयी आत्मनिर्भरता

रवींद्र यादव

महिला समूह के जरिये आत्मनिर्भर हो रहीं नोवामुंडी की महिलाएं

पश्चिमी सिंहभूम जिले नोवामुंडी भाग - 2 से जिला परिषद सदस्य सुश्री लक्ष्मी सुरेन वंचित वर्ग की महिलाओं के लिए रोजगार का सृजन कर उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य कर रही है. उनकी कोशिशों का नतीजा है कि नोवामुंडी बस्ती में जागृति महिला समिति की सदस्य सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण प्राप्त कर व सागेन महिला समिति होटल का सफल संचालन कर अतिरिक्त आय अर्जित कर रही है. अब इनकी पुरुषों पर निर्भरता समाप्त हो गयी है. ये स्वावलंबी बन गयी हैं. छह सिलाई मशीन है इनके पास. महिला सदस्य अपने-अपने घरों में ही एक-एक सिलाई मशीन रख कर अतिरिक्त समय में विभिन्न उत्पादों का निर्माण करती है. पेटीकोट, गुलदस्ता, झूमर-झालर समेत अन्य उत्पाद बनाती है. इससे घरेलू आवश्यकता के अलावा बिक्री कर अतिरिक्त आय भी अर्जित कर रही हैं. महिला समिति ने लक्ष्मी सुरेन की भूमिका की सराहना की है.

जागृति महिला समिति की अध्यक्ष सुनीता सुरेन बताती हैं कि घर-गृहस्थी संभालते हुए समय का सदुपयोग कर बागवानी, पीडीएस व कपड़ा सिलाई सहित अन्य उत्पाद वे तैयार करती हैं. समिति बच्चों की पढ़ाई-लिखाई कर खर्च भी वहन करती है. आलम यह है कि जागृति महिला समिति की सफलता की कहानी देख कर क्षेत्र में जिप सदस्य लक्ष्मी सुरेन ने उजाला महिला समिति के अलावा बड़ापासिया-चिरुपासिया में भी स्वयं सहायता समूह गठित कर रोजगार से जोड़ने की कवायद शुरू की है.

अपने-अपने घरों में सिलाई मशीन से विभिन्न उत्पाद तैयार करती महिलाएं, साथ में (बायें) जिप सदस्य लक्ष्मी.

रोजगार सृजन कर महिला सशक्तीकरण में उत्प्रेरक की भूमिका निभा रही जिप सदस्य लक्ष्मी सुरेन का कहना है कि महिलाओं को व्यवसाय के लिए वे अपने स्तर से प्रशिक्षण दिलाती हैं.

सिलाई मशीन को बदलकर इलेक्ट्रानिक्स सिलाई मशीन महिला समिति को दिलाने की पहल हो रही है. इस मशीन से कम समय में अधिक उत्पादों का निर्माण हो सकेगा. प्रशिक्षक सप्ताह में तीन दिन महिला समिति सदस्य को प्रशिक्षण देती हैं. महिला समिति दिलचस्पी व सहभागिता से सफलता की कहानी गढ़ रही हैं. कम लागत में अधिक आय भी होती है. उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से चलाये जा रहे राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के लाभ से स्वयं सहायता समूह की महिलाएं वंचित हैं. चाईबासा में आयोजित जिला स्तरीय बैठक में पंचायत स्तर पर एसएचजी की महिलाओं के लिए आधारभूत संरचना निर्माण (प्रशिक्षण केंद्र भवन) के लिए आवेदन दिया. लेकिन डीडीसी ने प्रस्ताव को ठुकरा दिया. अब उपायुक्त अबुबकर सिद्दीकी से महिलाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए आधारभूत संरचना उपलब्ध कराने की मांग की जाएगी. इस तरह जिप सदस्य अपने बल पर महिलाओं को रोजगार सृजन की दिशा में प्रभावी क्रियान्वयन कर एक मिसाल बनी हैं.

केंद्र व राज्य स्तर की ऐसी अनेक सरकारी योजनाएं भी हैं, जो ज़रूरतमंद महिलाओं को प्रशिक्षण-सह-आय उपार्जक गतिविधियों की स्थापना के लिए सहायता उपलब्ध कराती है, ताकि उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जा सके. भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) भी महिला उद्यमियों के लिए विशेष योजनाओं का कार्यान्वयन करता है.